International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 10 Issue 09, September 2020
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रामायणकालीन समाज में नारी सम्मान

डॉ॰ पूनम शर्मा

रामायण भारत का एक राष्ट्रीय आदि काव्य है यह धार्मिक एवं नैतिक आदर्शों का एक अद्भुत ग्रन्थ है। आज साहित्य में रामायण एक ऐसा निधिकाव्य है। जो प्राचीन समाज के मनुष्यों की आकांक्षाओं, भावनाओं तथा धारणाओं एवं तत्कालीन परम्पराओं का स्पष्ट चित्रण करता है। रामायणकाल में स्त्रियों की स्थिति श्रेष्ठ और मर्यादित थी रामायण–कालीन परिवार में नारी का बहुत सम्मान था और नारी का अपना एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त था यज्ञ आदि के लिए नारी का होना अनिवार्य था नारी ही सहधमचारिणी होती थी इसलिए पत्नी को उच्च स्थान प्राप्त था जैसे सीता पतिपरायणा था वह भारतीय नारी के लिए महान पराकाष्ठा की सूचक है। उस समय में नारियाँ शिक्षित, विदुषी, धर्मपरायण और नीति कुशल होती थी। रामायणकाल में नारी का जीवन धर्मयुक्त था परिवार सेवा उसका परम कर्त्तव्य रहता था। रामायणकालीन समाज में स्त्रियों को शिक्षा दी जाती थी कौशल्या, कैकेयी, सीता आदि को विवाह सू पूर्व अध्ययन की सविधा थी। सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी इसलिए कैकेयी अपने पति के साथ युद्ध में गयी थी जहाँ उसने अपने पति के प्राणों की रक्षा की थी। रामायणकाल में कोई सती प्रथा नहीं थी उसमें कहीं पर भी किसी रानी के सती होने का कोई वर्णन नहीं है और न ही किसी विधवा स्त्री के पूनर्विवाह का उल्लेख मिलता है। किन्तु फिर भी यह नारियाँ समाज और परिवार में सम्मान से देखी जाती थीं, इस काल में पत्नी के लिए पति ही सर्वस्व होता था पति के द्वारा किये गये शुभाशुभ कर्मों का फल स्त्री को प्राप्त होता था इस समय की ऐसी मान्यता थी–

न पिता नात्मजो नात्मा न माता न सखीजनः।
इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गति सदा।।

हो सकता है कि स्त्रियों की सामाजिक प्रतिष्ठा का स्तर हीन होने के कारण उन्हें कभी–कभी अनुचित व्यवहार का पात्र होना पड़ता था रामायण में कुछ आख्यान भी है जो यह सन्देश देते हैं कि नारी का सम्मान हो। उसके साथ कोई ऐसी निन्दनीय घटना न हो जिससे समाज का विनाश हो जैसे अहल्या के साथ छलपूर्वक संभोग करने के कारण इन्द्र को विर्वृषण होना पड़ा था रावण के द्वारा वेदवती से किया गया र्दुव्यवहार उसके विनाश का कारण बना आदि इस प्रकार के आख्यान स्त्री सम्मान के द्योतक है। इस प्रकार के आख्यानों के मध्यम से रामायण समाज में यह बताने का प्रयास हुआ है कि स्त्री के साथ किसी भी प्रकार का निन्दनीय व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए अगर

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 10 Issue 09, September 2020
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस तरह का व्यवहार कोई करता है तो स्त्री की सवर्था रक्षा की जानी चाहिए।

इन्द्र– अहल्या आख्यान– यह आख्यान रामायण में बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड़ में मिलता है। बाल काण्ड के अनुसार मिथिला उपवन के आश्रम में महर्षि गौतम द्वारा देवराज इन्द्र और अहल्या को शाप देने की घटना श्रीराम को विश्वामित्र ने सुनाई कि एक बार इन्द्र छल से गौतम मुनि का वेष धारण करके उनके आश्रम आए और अहल्या से रति की याचना की समागम के पश्चात् जब इन्द्र आश्रम से बाहर निकल रहे थे तभी गौतम मुनि पहुँच गये इन्द्र को मुनि वष में देखकर उसके न कहने योग्य निन्दनीय कर्म के लिए उसे गौतम ऋषि ने निर्वृषण होने का साथ दे दिया और अहल्या को समस्त प्राणियों से अदृश्य होकर आश्रम में ही दुखस्था में रहने का शाप दे दिया इस आख्यान से यह संकेत मिलता है कि जब समाज में स्त्री का तिरस्कार किया जाता है। स्त्री का पत्थर समान होना स्वाभाविक है किन्तु भगवान राम द्वारा उसका उद्धार होना समाज में स्त्री की सम्मान प्राप्ति का सूचक है। इसके विपरीत दोषी के अपराध के लिए दी गई सजा उस समय में निश्चितावधि की ओर संकेतित होती है।

अरजा आख्यान– अरजा आख्यान उत्तरकाण्ड में वर्णित है। राजा दण्ड का राज्य रामायण में विन्ध्य तथा शैलगिरि के मध्य भाग में दर्शाया गया है। एक समय राजा दण्ड, पुरोहित शुक्राचार्य की अनुपस्थिति में उनके आश्रम आये तथा वहाँ उनकी पुत्री अरजा के रूप सौंदर्य पर मुग्ध हो गये राजा ने अरजा की इच्छा के विरूद्ध बलपूर्वक उसके साथ समागम किया जिसके परिणाम स्वरूप शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री के साथ शास्त्र विरूद्ध आचरण करने पर राजा को रात दिनों के भीतर पुत्र सेना तथा वाहन सहित सम्पूर्ण राज्य नष्ट होने का शाप दे दिया तथा अरजा को वहीं आश्रम के भीतर रहते हुए स्वयं परमात्मा के प्रति समर्पित कर अपराध की निवृत्ति के लिए समय की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया इस आख्यान के द्वारा स्त्री सम्मान की बनाए रखने के लिए चेतावनी देते हुए इस बात की और संकेतित किया है कि किसी भी स्थिति में मनुष्य को मर्यादा के विरूद्ध आचरण नहीं करना चाहिए क्योंकि इसका परिणाम राजा दण्ड के जैसे भयंकर हो सकता है। रामायणकाल में स्त्रीयों पूर्ण सम्मान प्राप्त तो था किन्तु अगर किसी पुरुष की भांति स्त्री भी किसी पर पुरुष को अनेक उपायों से अपने सौंदर्य के द्वारा अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करती थी अर्थात् पुरुष को मार्ग से भ्रष्ट करतो थी तो उसे भी दण्ड का पात्र बनना पड़ता था जैसे– विश्वामित्र ऋषि की तपस्या भंग करने पर विश्वामित्र ने रम्भा नामक अप्सरा को शाप दिया। ऐसे ही और कई आख्यान हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि रामायणकालीन समाज में नारी को पूर्ण सम्मान प्राप्त था।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 10 Issue 09, September 2020
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रामायणकालीन समाज म वेश्याओं को भी राजकीय संरक्षण प्राप्त था वे राजकाज के कार्यों में सहयोग देती थीं और किसी अतिथि के स्वागत मनोरंजन में उनका प्रयोग किया जाता था उस समय में वेश्या राजकीय शिष्टाचार की साधक थीं। रामायण में नारी के स्वभाव और गुण–दोषों का विस्तृत वर्णन है समाज में उसकी अच्छी स्थिति कम से कम उस समय में एक कन्या, माता, विधवा के रूप में समस्त सम्भव सुविधाएँ और अधिकार प्राप्त थे।

संदर्भ सूचि–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
2. संस्कृत हिन्दी कोश – वामन शिवराम आप्टे
3. वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ॰ रघुवोर वेदाल्कार
4. रामायण – पंडित प्रेमनाथ गोड़
5. रामायण – श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास